Date ..
Page ..

एम० ए द्वितीय सेमेस्टर

(संस्कृत)

प्रथम - प्रश्नपत्र

भारतीय दर्शन

प्रस्तुतीकरण
डॉ० रश्मि वशिष्ठ

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

वेदान्त शब्द का अर्थ—'वेद का अन्त' से माना जाता है। वेदों का सार ही उपनिषदों में पाया जाता है। उपनिषदों में आत्मा तथा ब्रह्म का विषय वर्णित है। आत्मा तथा ब्रह्म सम्बन्धी वर्णनों के आधार पर जिस परम्परा का उदय हुआ वही आगे चलकर वेदान्त के नाम से जानी जाने लगी। 'वेदान्तसार' सदानन्द योगीन्द्र का एक अद्वितीय प्रकरण ग्रन्थ है।

वेदान्त के प्रमुख सिद्धान्त परिणामवाद तथा विवर्तवाद हैं। सृष्टि प्रक्रिया में वेदान्त सांख्य के विपरीत है। वेदान्तियों का मानना है कि अचेतन अथवा जड़ पदार्थ सृष्टिकर्ता कदापि नहीं हो सकते बल्कि कोई चेतन ही सृष्टिकर्ता हो सकता है। अतः वेदान्ती चेतन ब्रह्म को ही सृष्टि का कर्ता मानते हैं—**"अस्य जगतो जन्मस्थिति भंगः यतः सर्वशत् सर्वशक्तिकारणात् भवति तद् ब्रह्म।"**

वेदान्त दर्शन—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, आगम, अर्थापत्ति तथा अभाव के भेद से छः प्रमाण स्वीकार करता है। स्थूल सृष्टि का निर्माण एक विशेष प्रक्रिया द्वारा होता है। इसमें पांच तन्मात्राओं के संयोग से स्थूलमहाभूतों की उत्पत्ति होती है। जिससे स्थूल शरीर का निर्माण होता है। स्थूल शरीर (i) जरायुज, (ii) अण्डज, (iii) स्वेदज तथा (iv) उद्भिज्ज के भेद से चार प्रकार के होते हैं। चारों की अपनी अलग-अलग उत्पत्ति होती है :

(i) **जरायुज**—मनुष्य, इत्यादि इसी श्रेणी में आते हैं।

(ii) **अण्डज**—पक्षी, सर्प, इत्यादि अण्डज की श्रेणी में आते हैं।

(iii) **स्वेदज**—इसमें स्वेद से उत्पन्न होने वाले जूं, कीट, आदि आते हैं।

(iv) **उद्भिज्ज**—वृक्ष, लता, इत्यादि को उद्भिज्ज की श्रेणी में रखा जाता है।

वेदान्त में ब्रह्म तथा अविद्या या अज्ञान के भेद से दो तत्व पाए जाते हैं। पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पांच वायु, मन तथा बुद्धि इन 17 तत्वों का योग ही सूक्ष्म शरीर होता है। सामान्यतया मोक्ष के विषय में कहा जाता है कि स्थूल शरीर का अन्त ही मोक्ष है परन्तु यह धारणा गलत है। संसार के आवागमन से रहित हो जाने को मोक्ष कहते हैं। वेदान्त दर्शन में कहा गया है कि गुरु

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उपदेश, आत्मज्ञान अथवा श्रुतियों को पढ़ने से ब्रह्म की प्राप्ति हो जाना ही मोक्ष है।

अनुबन्ध चतुष्टय

किसी कृति या ग्रन्थ को पढ़ने से पूर्व कुछ प्रमुख विषयों पर ध्यान दिया जाता है, जिनमें (i) प्रस्तुत ग्रन्थ को पढ़ने का अधिकारी कौन है? (ii) इसमें किस विषय को निबद्ध किया गया है? (iii) इसमें लिखित विषय से पुस्तक का क्या सम्बन्ध है? तथा (iv) ग्रन्थ को पढ़ने का क्या प्रयोजन है? इत्यादि चारों प्रश्नों के उत्तर को अनुबन्ध चतुष्टय के नाम से जाना जाता है :

'तत्र अनुबन्धो नाम अधिकारिविषयसम्बन्ध प्रयोजनानि'

अनुबन्ध चतुष्टय के चार अनुबन्धों का संक्षिप्त परिचय निम्नवत् है :

(i) **अधिकारी**—जिस मनुष्य ने पूर्व जन्म में तथा इस जन्म में वेदों का अध्ययन किया हो तथा शास्त्रों द्वारा कथित निषिद्ध कर्मों का परित्याग किया हो, जिसका मन पापों से मुक्त हो इत्यादि ऐसे ही साधनों से सम्पन्न प्रमाता को अधिकारी कहा जाता है—**अधिकारी तु विधिवदधीतवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिलवेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरःसरं नित्यनैमित्तिक प्रायश्चित्तोपासनानुष्ठानेन निर्गतनिखिल-कल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता।**

(ii) **विषय**—जीव और ब्रह्म में एकता स्थापित करना ही वेदान्त का लक्ष्य है—**जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यम् प्रमेयं तत्र एव वेदान्तानां तात्पर्यात्।** अतः स्पष्ट है कि सर्वज्ञाता और अल्पज्ञाता में सम्बन्ध स्थापित करना ही वेदान्तसार का प्रतिपाद्य विषय है।

(iii) **सम्बन्ध**—जीव तथा ब्रह्म की एकता के साथ-साथ उन दोनों के प्रतिपादक उपनिषद् वाक्यों का जो बोध्य-बोधक भाव है वह सम्बन्ध कहलाता है—**सम्बन्धवस्तु-तदैक्यप्रमेयस्य तत्प्रतिपादकोनिषत् प्रमाणस्य च बोध्यबोधकभावः।**

(iv) **प्रयोजन**—जीव तथा ब्रह्म के मध्य एकता हो जाने पर जो अज्ञाननिवृत्तिपूर्वक आत्मा के स्वरूपानन्द की प्राप्ति है वही वेदान्त का प्रयोजन

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अध्यारोप-अपवाद

जिस प्रकार 'सीप' में चांदी का भ्रम तथा रज्जु में सर्प का भ्रम होने लगता है उसी प्रकार अद्वैत आत्मतत्व पर अज्ञान के कारण संसार की प्रतीति भी भ्रमात्मक प्रतीत होने लगती है। इसी को अध्यारोप कहा जाता है। सदानन्द योगीन्द्र ने अज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है कि **असर्पभूतायां रज्जौ सर्पारोपवद्वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः।** अर्थात् सर्प से रहित होने पर भी रस्सी में सर्प का आभास होने के समान किसी वस्तु में अन्य वस्तु के आरोप को अध्यारोप कहते हैं। उसी प्रकार ब्रह्म और जगत् से सम्बन्धित आरोप में सच्चिदानन्द ब्रह्म ही वस्तु है। अज्ञान से लेकर सम्पूर्ण जड़ समुदाय अवस्तु कहलाता है—**वस्तु सच्चिदानन्दानन्ताद्वय ब्रह्म। अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु॥**

दीपक जलाने पर रस्सी में मिथ्या सर्प का ज्ञान हो जाने पर या रस्सी मात्र शेष रह जाने पर मिथ्या ज्ञान की प्रतीति होती है। उसी प्रकार श्रवण, मनन, आदि का निरन्तर अभ्यास करने से ज्ञान का उदय हो जाने पर सम्पूर्ण मिथ्या सांसारिक सृष्टि का निश्चय हो जाता है तब सच्चिदानन्द ब्रह्म ही शेष रह जाता है यही अपवाद कहलाता हैं।

अतः कहा जा सकता है कि सच्चिदानन्द ब्रह्म ही सत् है अज्ञान तो त्रिगुणात्मक है वह न तो सत् है और न ही असत् है। बल्कि अवर्णनीय

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

है—**अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधी भावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात् 'देवात्मशक्ति स्वगुणैर्निगूढाम' इत्यादि श्रुतेश्च॥**

लिंगशरीरोत्पत्ति

वेदान्त में लिंग शरीर को ही सूक्ष्म शरीर के नाम से जाना जाता है। सूक्ष्म शरीर **पांच ज्ञानेन्द्रियों** (श्रोत, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण), **पांच कर्मेन्द्रियों** (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ), **पांच वायु** (प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान), **मन** तथा **बुद्धि** 17 अवयवों के योग से बना होता है—**शूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि। अवयवास्तु ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं, बुद्धिमनसो, कर्मेन्द्रियपञ्चकं, वायुपञ्चकञ्चेति॥**

वेदान्तियों का मानना है कि पांच ज्ञानेन्द्रियां आकाशादि में स्थित सत्वगुणांश से पृथक्-पृथक् उत्पन्न होती हैं, जैसे—आकाश के सत्वगुणांश से श्रोत, वायु के सत्वगुणांश से त्वक्, तेज के सत्वगुणांश से चक्षु, जल के सत्वगुणांश से रसना तथा पृथ्वी के सत्वगुणांश से घ्राण उत्पन्न होती हैं—**ज्ञानेन्द्रियाणि श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणाख्यानि। एतान्याकाशादीनां सात्विकांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः पृथक्-पृथक् क्रमेणोत्पद्यन्ते॥**

निश्चय करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति को बुद्धि कहा जाता है, जैसे—मैं पुरुष हूं, मैं स्त्री हूं, मैं वनवासी हूं, इत्यादि।

बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तःकरणवृत्ति।

मन अन्तःकरण वृत्ति से उत्पन्न होता है—**मनोनाम संकल्पविकल्पात्मिकान्तःकरण वृत्ति।** अर्थात् संकल्प और विकल्प करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति मन है।

पुनः सूक्ष्म शरीर के 17 अवयवों से तीन कोशों की उत्पत्ति होती है। जिनका संक्षिप्त परिचय निम्नवत् है :

(i) **विज्ञानमय कोश**—पांच ज्ञानेन्द्रियों (श्रोत, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण) से युक्त बुद्धि विज्ञानमय कोश कहलाती है—

इयं बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहिता विज्ञानमयकोशो भवति।

(ii) **मनोमय कोश**—पांच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा मन मनोमय कोश कहलाता है—**मनस्तु ज्ञानेन्द्रियैः सहितं सन्मनोमयकोशो भवति।**

(iii) **प्राणमय कोश**—पांच (प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान) वायु तथा पांच कर्मेन्द्रियों (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) का योग प्राणमय कोश कहलाता है।

ये ही तीनों कोश सूक्ष्म शरीर या लिंग शरीर के नाम से पुकारे जाते हैं—**एतेषु कोशेषु मध्ये विज्ञानमयो ज्ञानशक्तिमान कर्तृरूपः। मनोमय इच्छाशक्तिमान् करण रूपः प्राणमयः क्रियाशक्तिमान कार्यरूपः। योग्यत्वादेवमेतेषां विभाग इति वर्णयन्ति। एतत्कोशत्रयं मिलितं सत्सूक्ष्मशरीरमित्युच्यते॥**

CS Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

पञ्चीकरण

स्थूल दृष्टि के विकास के लिए पांच महाभूतों (आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी) का परस्पर मिश्रण ही पञ्चीकरण के नाम से जाना जाता है।

पञ्चीकरण प्रक्रिया में सबसे पहले पांचों महाभूतों को लेते हैं और उन पांचों को आधा-आधा कर लेते हैं इस प्रकार पांचों महाभूतों के दस भाग हो जाते हैं। पुनः पांचों महाभूतों के आधे भाग को चार-चार भागों में बांट देते हैं। इस प्रकार एक महाभूत के पांच भाग हो जाते हैं। इन पांचों भागों में एक भाग आधा है और शेष चार भाग 1/8 भाग के चार टुकड़े हैं, ऐसी स्थिति में प्रत्येक महाभूत के 1/8 के भागों को अन्य चार महाभूतों के आधे-आधे भागों में मिला देते हैं, जैसे—पृथ्वी में आधा भाग पृथ्वी का और शेष आधे भाग में 1/8 भाग आकाश, 1/8 भाग वायु, 1/8 भाग तेज तथा 1/8 भाग जल का होता है। इसी प्रकार अन्य महाभूतों में भी इसी नियम का पालन करते हैं। इसी प्रक्रिया को पञ्चीकरण कहते हैं—**पञ्चीकरणं त्वाकाशादिपञ्चस्वेकैकं द्विधा समं विभज्य तेषु दशसु भागेषु प्राथमिकान् पञ्चभागान् प्रत्येकं चतुर्धा समं विभज्य तेषां चतुर्णां भागानां स्वस्वद्वितीयार्द्ध भाग परित्यागेन भागान्तरेषु संयोजनम्॥**

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

पञ्चीकरण प्रक्रिया के पश्चात् पांचों महाभूत अपने-अपने गुणों को ग्रहण कर लेते हैं, जैसे—आकाश, वायु, तेज, जल तथा पृथ्वी क्रमशः शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध ग्रहण कर लेते हैं।

पञ्चीकरण की दशा में आकाश में शब्द; वायु में शब्द, स्पर्श; तेज में शब्द, स्पर्श तथा रूप; जल में शब्द, स्पर्श, रूप तथा रस और पृथ्वी में शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध के गुण पाए जाते हैं।

सरलार्थ—पांच व्यक्तियों के पास एक-एक रुपए के पांच नोट हैं। पांचों व्यक्ति अपने-अपने नोट को दो अठन्नियों में भुना लेते हैं और एक अठन्नी की चार दुअन्नियां कराकर अन्य चारों व्यक्तियों को दे देते हैं। यही कार्य पांचों व्यक्तियों ने आपस में किया। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के पास पुनः एक रुपया हो गया। इसी प्रकार महाभूतों के विषय में समझना चाहिए।

विवर्त

किसी वास्तविक वस्तु में अज्ञानता के कारण असत्य का आरोप करके अज्ञान, आदि प्रपञ्च कारण अवस्तु न बनकर वस्तु मात्र में स्थान अपवाद कहलाता है। यह (i) विवर्तभाव तथा (ii) विकारभाव के भेद से दो प्रकार का होता है। विवर्तभाव को स्पष्ट करते हुए 'वेदान्तसार' में लिखा है कि किसी वस्तु में अपने रूप के परित्याग के बिना दूसरी वस्तु का मिथ्याभास होना विवर्त कहलाता है—**'अतत्वतोऽन्यता प्रथा विवर्त इत्युरीदितिः'** अर्थात् कोई रज्जु अपने आकार को छोड़े बिना ही सर्प के समान प्रतीत होने लगती है तो वह सर्प जैसी आकृति रज्जु का विवर्त कहलाता है। परन्तु जब कोई वस्तु अपने वास्तविक स्वरूप को त्यागकर किसी अन्य वस्तु का स्वरूप धारण कर लेती है तो वह विकारभाव कहलाता है—**'सतत्वर्तेऽन्यथा प्रथा विकार इत्युदीरितिः'** अतः कहा

Scanned with CamScanner

जा सकता है कि जब कोई वस्तु अपने वास्तविक स्वरूप को छोड़कर किसी अन्य रूप को धारण कर लेती है तो उसे परिणाम या विकारभाव कहते हैं, जैसे दूध का दही के रूप में परिवर्तित हो जाना विकारभाव कहलाता है। किसी वस्तु का अपने स्वरूप को न छोड़ते हुए दूसरी वस्तु में मिथ्या प्रतीति होना विवर्तभाव है।

जीवन्मुक्ति

सम्पूर्ण लौकिक तथा पारलौकिक बन्धनों को तोड़कर सच्चिदानन्द ब्रह्म में लीन हो जाना ही जीवन्मुक्ति है। श्रुतिवाक्य, स्वानुभव, इत्यादि से अज्ञान का नाश होकर ज्ञान की भावना जाग्रत होती है तब मनुष्य ब्रह्म का साक्षात्कार करता है। यह ब्रह्म साक्षात्कार ही जीवन्मुक्ति कहलाता है।

जीवन्मुक्त के संचित कर्म नष्ट हो जाते हैं केवल प्रारब्ध कर्म ही शेष रह जाते हैं।

जीवन्मुक्त को परिभाषित करते हुए वेदान्तसार में लिखा है कि—**जीवन्मुक्तो नाम स्वस्वरूपाखण्डब्रह्मज्ञानेन "तदज्ञानबाधनद्वारा स्वस्वरूपाखण्डब्रह्मणि साक्षात्कृतेऽज्ञानतत्कार्य-सञ्चितकर्मसंशयविपर्यादीनामपि बाधितत्वादखिलबन्धरहितो ब्रह्मनिष्ठः।"** अर्थात् अपने ही स्वरूप खण्ड रहित ब्रह्मज्ञान द्वारा, इसमें स्थित अज्ञान को दूर करके, ब्रह्म का साक्षात्कार होने से अज्ञान और उससे उत्पन्न कार्य में एकत्रित कर्म, सन्देह, विपर्यय इत्यादि को नष्ट करके, सम्पूर्ण बन्धनों से हीन ब्रह्म में निष्ठावान पुरुष जीवन्मुक्त कहलाता है।

ब्रह्म का दर्शन होने पर जीवन्मुक्त के सम्पूर्ण सन्देह नष्ट हो जाते हैं तथा इसके बन्धन क्षीण पड़ जाते हैं—**भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥**

CS Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner